आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/24-26

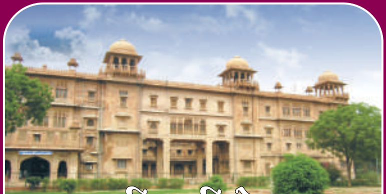

प्रसार शिक्षा निदेशालय
राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बीकानेर

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 11 अंक : 11 जुलाई, 2024 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

कुलपति सन्देश

पशुजन्य रोग सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए खतराः कुलपति

आप सभी को विश्व जुनोटिक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

विश्व जुनोटिक दिवस दुनिया भर में हर वर्ष 6 जुलाई को मनाया जाता है। यह दिवस पशुजन्य रोगों के खिलाफ प्रथम टीकाकरण की वर्षगांठ का प्रतीक है। पशुजन्य रोग वे रोग होते हैं जो पशुओं से मनुष्यों में और मनुष्यों से पशुओं में फैलते हैं। यह दिवस पशुजन्य रोगों के प्रति जागरूकता फैलाने तथा इन बीमारियों को रोकने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से मनाया जाता है। अधिकांश उभरती संक्रामक बीमारियां पशुजन्य है जो कुल बीमारियों का 60 प्रतिशत है, इनमें से 71.8 प्रतिशत बीमारियां वन्यजीवों से उत्पन्न हो रही है। पिछले चार दशकों में लगभग 50 नई बीमारियों की पहचान की गई है जो मनुष्यों में गम्भीर बीमारियों या मृत्यु का कारण बन सकती है। ब्रिटिश मेडिकल जर्नल में प्रकाशित लेख में कहा गया है कि बढ़ती जनसंख्या व जलवायु परिवर्तन से पशुजन्य रोगों में बढ़ोतरी हो रही है जो भविष्य में कोरोना जैसी अन्य महामारियों की ओर इशारा कर रही हैं। वार्षिक रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि वर्ष 1963 से 2019 के बीच पशुजन्य संक्रमण से करीब 5 प्रतिशत मौतों में वृद्धि हुई है, यदि यही स्थिति रही तो वर्ष 2050 तक पशुजन्य संक्रमण से मरने वालों की संख्या 12 गुणा हो जायेगी। स्टेट ऑफ द वर्ल्ड रिपोर्ट–2022 के अनुसार चीन व भारत नये पशुजन्य संक्रमणों के हॉट–स्पॉट बन रहे हैं। अगले कुछ दशकों में लोगों पर पशुजन्य रोगों का अधिक दबाव बढ़ने के आसार है। बढ़ती जनसंख्या तथा जंगलों पर बढ़ते दबाव के चलते अगले 50 वर्षो में अन्य स्तनधारियों में वायरस फैलाने वाले स्तनधारियों के 15000 से अधिक नए मामले सामने आ सकते हैं। जलवायु परिवर्तन से भी प्रजातियों में पशुजन्य रोगों के संक्रमण का खतरा बढ़ रहा है, जो भारत व दक्षिणी अफ्रीका जैसे अधिक जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्रों के लिए अधिक खतरनाक हो सकते हैं। यहां पर संक्रामक रोगों के फैलने की दर में 4000 गुणा वृद्धि देखी जा सकती है।

अतः पशुजन्य रोगों के खतरे को रोकने के लिए ''एक स्वास्थ्य'' परिकल्पना को अपनाना होगा अर्थात भावी महामारियों की रोकथाम, सार्वजनिक स्वास्थ्य, पशु स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए एकीकृत एक स्वास्थ्य पद्वति को अपनाते हुए ही कर सकते हैं। विश्वविद्यालय भी अपनी विभिन्न इकाइयों के माध्यम से आमजन में पशुजन्य रोगों के प्रति जागरूकता फैलाने का कार्य करने में प्रयासरत है।

प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार गर्ग

माननीय राज्यपाल, राजस्थान एवं कुलाधिपति श्री कलराज मिश्र को विश्वविद्यालय की प्रगति से अवगत करवाते हुए कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।
–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

आई.सी.ए.आर. द्वारा कृषि एवं वेटरनरी विश्वविद्यालयों की इंटरेक्शन बैठक
कुलपति प्रो. गर्ग ने विश्वविद्यालय गतिविधियों का दिया प्रेजेंटेशन

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं देश के कृषि एवं वेटरनरी विश्वविद्यालयों की इंटरेक्शन बैठक 1 जून को महानिदेशक आई.सी.ए.आर. डॉ. हिमांशु पाठक की अध्यक्षता में आयोजित की गई। कुलपति प्रो. गर्ग ने वेटरनरी विश्वविद्यालय की शिक्षा, अनुसंधान एवं प्रसार कार्यक्रमों के बारे में जानकारी प्रदान की। प्रो. गर्ग ने शैक्षणिक गतिविधियों के साथ–साथ अत्याधुनिक पशु चिकित्सकीय सुविधाओं, कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम, देशी गौवंश अनुसंधान, लघु एवं दीर्घकालीन सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम, आई.सी.ए.आर. की विभिन्न परियोजनाएं, राष्ट्रीय संस्थानों एवं उद्योगों के साथ एम.ओ.यू., विभिन्न अनुसंधानों के पेटेंट, एक्सप्रिरियेंसल लर्निंग यूनिट तथा विश्वविद्यालय की बजट स्थिति की जानकारी प्रेजेंटेशन के माध्यम से दी। महानिदेशक आई.सी.ए.आर. डॉ. पाठक ने विश्वविद्यालय की अत्याधुनिक चिकित्सकीय सुविधाएं, कृषि अनुसंधान केंद्र एवं पशु विज्ञान केंद्रों के माध्यम से पशुपालकों हेतु कौशल विकास एवं तकनीकी हस्तांतरण के कार्यों एवं विश्वविद्यालय के विभिन्न संस्थानों के साथ एम.ओ.यू. की सराहना की एवं देश के दूसरे विश्वविद्यालयों को भी प्रसार एवं पशुचिकित्सकीय सुविधाओं के विस्तार हेतु प्रेरित किया। बैठक में उप–महानिदेशक (कृषि), आई.सी.ए.आर. डॉ. आर.सी. अग्रवाल सहित देश के अन्य कृषि एवं वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति एवं आई.सी.ए.आर. केंद्रो के निदेशक एवं अधिकारी उपस्थित रहे।

वेटरनरी विश्वविद्यालय में मनाया विश्व दुग्ध दिवस
दूध प्रसंस्करण बने पशुपालकों के आर्थिक सुदृढ़ीकरण का आधार : कुलपति प्रो सतीश के. गर्ग

वेटरनरी विश्वविद्यालय के संघटक पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर एवं डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बीकानेर में 'विश्व दुग्ध दिवस' के अवसर पर 1 जून को विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एस.के. गर्ग ने कहा कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष विश्व दुग्ध दिवस "विश्व को पोषण देने के लिए गुणवत्तापूर्ण पोषण प्रदान करने में डेयरी की महत्वपूर्ण भूमिका" विषय पर मनाया जा रहा है विश्व दुग्ध दिवस को मनाने का उद्देश्य आमजन को दूध की उपयोगिता एवं आर्थिक महत्व के प्रति जागरूक करना है ताकि दुग्ध एवं दुग्ध व्यवसाय से जुड़े पशुपालको, इण्डस्ट्रीज एवं संस्थानों का आर्थिक उत्थान तथा आमजन को स्वच्छ एवं पौष्टिक दुग्ध एवं दुग्ध उत्पाद उपलब्ध हो सके। प्रो. गर्ग ने कहा कि भारत विश्व के कुल दूध उत्पादन का 25 प्रतिशत उत्पादन कर सबसे अधिक दुग्ध उत्पादन वाला देश है। लेकिन देश में दूध का प्रसंस्करण तुलनात्मक कम हो रहा है। दूध की गुणवत्ता सुधार कर एवं प्रसंस्करण को बढ़ावा देकर हम दुग्ध व्यवसाय एवं पशुपालकों को और अधिक आर्थिक सुदृढ़ बना सकते हैं। प्रो. गर्ग ने कहा कि पशुचिकित्सकों का कार्य क्षेत्र केवल बीमार पशुओं के ईलाज तक ही सीमित ना रहकर पशु उत्पादकता बढ़ाना भी है। डॉ. ओमप्रकाश (उरमूल डेयरी, बीकानेर), अधिष्ठाता वेटरनरी महाविद्यालय प्रो. ए.पी. सिंह एवं अधिष्ठाता डेयरी विज्ञान महाविद्यालय बीकानेर प्रो. हेमन्त दाधीच ने भी सम्बोधित किया।

पशु स्वास्थ्य और पशु कल्याण परिप्रेक्ष्य से मानकीकरण का महत्व विषय पर राष्ट्रीय सेमिनार

वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के इंजीनियरिंग और टेक्नोलॉजी केंद्र, बीकानेर एवं भारतीय मानक ब्यूरो (बी. आई.एस.) नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में 4 जून को "पशु स्वास्थ्य और पशु कल्याण परिप्रेक्ष्य से मानकीकरण का महत्व" विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने कहा कि वर्तमान समय में मानको का महत्व बहुत बढ़ गया है। आमजन में खाद्य पदार्थों, उपकरणों, रोजमर्रा उपयोगी सामानों में मानकों के प्रति जागरूकता बढ़ी है। खाद्य पदार्थों में मानको की पालना ना केवल स्वास्थ्य की दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है अपितु प्रतिस्पर्धा बाजार में खाद्य पदार्थों एवं सामानों के आयात–निर्यात में भी इसकी पालन बहुत आवश्यक है। इस राष्ट्रीय सेमिनार का उद्देश्य विद्यार्थियों में मानकों के महत्व के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना है। सेमिनार की मुख्य वक्ता निताशा डोगर, निदेशक (कृषि खाद्य विभाग) भारतीय मानक ब्यूरो, नई दिल्ली, प्रति कुलपति प्रो. हेमन्त दाधीच एवं अधिष्ठाता वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर प्रो. ए.पी. सिंह ने सम्बोधित किया। इंजीनियरिंग और टेक्नोलॉजी केंद्र के प्रमुख अन्वेषक डॉ. अशोक डांगी ने सभी को धन्यवाद दिया। डॉ. दिवाकर चौधरी सेमिनार के आयोजन सचिव रहे।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर एन.सी.सी. कैडेट्स ने घोड़ों पर खड़े होकर किया योग

दसवां अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस वेटरनरी विश्वविद्यालय में 21 जून को उल्लास पूर्वक मनाया गया। 'योग स्वयं एवं समाज के लिए' विषय पर आयोजित योग दिवस पर कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने सम्बोधित करते हुए कहा कि योग एवं प्राणायाम भारत में स्वस्थ जीवन की प्राचीन पद्धति है, जिसको ऋषि मुनि नियमित दिनचर्या के रूप में अपनाते थे एवं स्वस्थ एवं संयमित जीवन यापन करते थे। कुलपति प्रो. गर्ग ने कहा कि हम हमारी पुरातन पद्धतियों एवं जीवन शैली से दूर होते जा रहे हैं, जिससे हमारी पुरातन ज्ञान धरोहर विलुप्त हो रही है। कुलपति प्रो. गर्ग ने सभी को संयमित दिनचर्या अपनाने, योग एवं प्राणायाम को जीवन–शैली का नियमित हिस्सा बनाने हेतु प्रेरित किया। योग प्रशिक्षक विनोद जोशी एवं सुधीर भाटिया ने विभिन्न योग मुद्राओं एवं प्राणायाम का अभ्यास करवाया तथा विभिन्न योग मुद्राओं के लाभ बताये। एन.सी.सी. कैडेट्स द्वारा अश्व पर खड़े होकर विभिन्न योग मुद्राओं का प्रदर्शन किया गया जिसकी सभी ने सराहना की।

विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर और डेयरी विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी महाविद्यालय, बीकानेर द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर पौधारोपण एवं पक्षियों हेतु परिंडों का वितरण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया। वेटरनरी महाविद्यालय के अधिष्ठाता प्रो. ए.पी. सिंह ने इस अवसर पर महाविद्यालय परिसर में पौधारोपण किया तथा शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं एन.सी.सी. कैडेट्स ने पेड़ों पर पक्षियों हेतु परिंडों को लगाकर पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया। अधिष्ठाता डेयरी विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी महाविद्यालय, बीकानेर प्रो. हेमन्त दाधीच ने बताया कि महाविद्यालय में विश्व पर्यावरण दिवस "हमारी भूमि हमारा भविष्य" विषय पर मनाया गया। जिसमें डॉ. परमाराम गोरछिया एवं डॉ. रीटा ने विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण पर व्याख्यान दिये। इस अवसर पर 1 राज आर एण्ड वी स्क्वाड्रन एन.सी.सी. यूनिट, बीकानेर के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल डी.एस. दूहन, शिक्षक एवं विद्यार्थी मौजूद रहे।

मांस प्रोद्यौगिकी प्रयोगशाला का शिलान्यास

पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर परिसर में 19 जून को कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग द्वारा मांस प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला का भूमि पूजन एवं शिलान्यास किया गया। कुलपति प्रो. गर्ग ने बताया कि वी.सी.आई. के मानकों के अनुसार पशुधन उत्पादन प्रोद्यौगिकी विभाग के अन्तर्गत स्थापित मांस प्रोद्यौगिकी प्रयोगशाला न केवल छात्रों को बेहतर शिक्षण एवं प्रशिक्षण में लाभदायक होगी अपितु इस प्रयोगशाला में विभिन्न मांस उत्पादों के कुशल प्रसंस्करण कर उप–उत्पादों पर शोध भी किया जायेगा, जिससे ना केवल पशु मांस उत्पादों की गुणवत्ता का मानकीकरण होगा अपितु खाद्य मांस उत्पादो के मूल्य संवर्धन में भी प्रायोगिक ज्ञान विद्यार्थियों को मिलेगा। कुलपति ने बताया कि इस मांस प्रोद्यौगिकी प्रयोगशाला के शुरू हो जाने से विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को मीट की गुणवत्ता निर्धारण, विभिन्न मीट उत्पादों के तकनीकी ज्ञान एवं मूल्य संवर्धन को समझने में सहायता मिलेगी। शिलान्यास कार्यक्रम के दौरान कार्यवाहक अधिष्ठाता प्रो. हेमन्त दाधीच, प्रभारी एल.पी.टी. विभाग डॉ. राजकुमार बैरवाल, निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूडिया, अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. प्रवीण बिश्नोई, परीक्षा नियन्त्रक प्रो. उर्मिला पानू, ई.ओ. पंकज सोलंकी और विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष व इन्चार्ज एवं फैकल्टी सदस्य मौजूद रहे।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी

गाढ़वाला में पशुओं को तापघात से बचाव हेतु प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु आपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र के द्वारा विश्वविद्यालय के सामाजिक उत्तरदायित्व के तहत गोद लिए गए गांव गाढ़वाला में 3 जून को पशुओं में तापघात के लक्षण एवं निवारण विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। केन्द्र के मुख्य अन्वेषक प्रो. प्रवीण बिश्नोई ने बताया की गर्मियों के मौसम में उचित रखरखाव के अभाव में पशु तापघात के चपेट में आ जाते हैं। पशुपालकों को उचित पेयजल एवं रखरखाव की जानकारी देकर उनको तापघात से बचाया जा सकता है। प्रशिक्षण शिविर में पशुपालकों को तापघात से पशुओं का बचाव पुस्तिका, खनिज लवण एवं कृमि नाशक दवा का वितरण भी किया गया।

गाढ़वाला में जल संरक्षण विषय पर निकाली जागरूकता रैली

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी के अंतर्गत गोद लिए ग्राम गाढ़वाला में पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयंसेवकों द्वारा 29 जून को जल संरक्षण विषय पर जागरूकता रैली निकाली गई। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि भूमि का जल स्तर दिन प्रतिदिन गिरता जा रहा है अतः जलवायु परिवर्तन के वर्तमान परिपेक्ष में जल संरक्षण की महत्ती आवश्यकता है। इसी संदर्भ में आज गाढ़वाला में जल संरक्षण रैली का आयोजन किया गया। रैली गांव के प्रमुख मार्गो से गुजरते हुए अधिक से अधिक ग्राम वासियों को जल संरक्षण हेतु जागरुक एवं प्रेरित किया तथा जल संरक्षण का महत्व बताया गया। इस अवसर पर सरपंच प्रतिनिधि सुमेर सिंह, यूनिवर्सिटी के डॉ. नीरज कुमार शर्मा एवं डॉ. संजय महला मौजूद रहे।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर) द्वारा 1, 7 एवं 14 जून को गांव मानकसर, अमरपुरा एवं मनफूलसिंह वाला गांवों में एवं दिनांक 29 जून को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 155 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा दिनांक 5, 7, 10, 11, 12, 13 एवं 14 जून को गांव घाटा, सेह, सुहेरा, परमदरा, बैलारा, महरामपुर एवं खटौटी गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 130 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 10, 12, 20 एवं 25 जून को गांव रूपाश्पुर, पचगांव, जागीरपुरा कलां एवं कुरेन्दा गांवों में तथा दिनांक 27 जून को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 141 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 7, 11, 14 एवं 20 जून को गांव डोडुआ, रामपुरा, उड़ एवं बलवन्तगढ़ गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 130 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर द्वारा 4 जून को गांव थूर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण शिविर में 10 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 5, 6, 10 एवं 25 जून को गांव मानपुरा, अर्जुनपुरा, बनियानी एवं गढ़ेपान गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 93 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा (चित्तौडगढ़) द्वारा 26 जून को केन्द्र परिसर में .एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 35 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 5, 11, 25 एवं 27 जून को गांव हथगी, झीराना, रानोली एवं घाटी में तथा दिनांक 1 जून को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 145 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 1, 5 एवं 24 जून को गांव पेबाना, बदवासी एवं ढाका का बास में तथा दिनांक 21 जून को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों से 80 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा को गांव 3, 11, 13, 15 एवं 19 जून को गांव टांडा, पारड़ा फलां, छापरिया, करतरवा एवं उपला फलां गांवों में तथा दिनांक 5 जून को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय एंव तीन दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 162 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर) द्वारा 1, 18, 19 एवं 20 जून को गांव कुसुम्बी, हुडास, मामरोदा एवं हीरावती गांवों में तथा दिनांक 11 एवं 27 जून को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 146 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 5, 11 एवं 25 जून को गांव कालवास, सहजरासर एवं चक–280 गांवो में तथा दिनांक 21 जून को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 123 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर (जयपुर) द्वारा 7, 11, 14, 19, 22 एवं 25 जून को गांव डेहरा, ढाकाला, चोमू, अगरपुरा, जालसु एवं जैतपुरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 104 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोजावर–पाली

पशु विज्ञान केन्द्र, जोजावर (पाली) द्वारा 1, 4, 5, 6, 7 एवं 10 जून को गांव आसनजोडवान, बिंगरला, भघोड़ा, रामबाग, करमाल एवं बरकाना गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 56 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 3–6, जून चार दिवसीय, दिनांक 19–25 जून को सात दिवसीय एवं 26–29 जून को चार दिवसीय कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 104 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

बकरी पालनः एक सफल व्यवसाय

बकरी को हमेशा से गरीब की गाय कहा जाता है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था और पशुपालन में बकरी पालन का महत्व लगातार बढ़ रहा है। आजकल, यह केवल कमजोर वर्ग द्वारा छोटे समूहों में ही नहीं, बल्कि बड़े पैमाने पर व्यवसाय के रूप में भी किया जा रहा है।

राजस्थान की प्रमुख बकरी नस्लें :

राजस्थान में सिरोही, मारवाड़ी, जमनापारी और झकराना जैसी प्रमुख बकरी नस्लें पाई जाती हैं। सही देखभाल, संतुलित आहार और कुशल प्रबंधन से बकरी पालन एक लाभदायक व्यवसाय बन सकता है।

बकरी पालन से आय के प्रमुख स्रोत :

- **दूध बेचकर :** बकरी का दूध बेचकर।
- **दुधारू बकरियों को बेचकर :** दूध देने वाली बकरियों को बेचकर।
- **मांस बेचकर :** बकरों को मांस के रूप में बेचकर।
- **ऊन और खाल से :** ऊन और खाल बेचकर।
- **खाद बेचकर :** मिंगनियों (बकरी की बीट) को खाद के रूप में बेचकर।

बकरियों के लिए आवास व्यवस्था :

- बकरी की आवास व्यवस्था में कुछ स्थान छाँवदार और ढका हो, वहीं कुछ खुला स्थान हो जिसमें चारा और पानी उपलब्ध हो।
- बाड़ा पूर्व–पश्चिम दिशा में बनाएं ताकि सूरज की सीधी गर्मी और ताप से बचा जा सके।
- प्रति व्यस्क बकरी के लिए 1 से 1.5 वर्गमीटर का स्थान होना चाहिए।
- नर बकरे, छोटे बच्चे, दुधारू बकरियों और बीमार पशुओं के लिए अलग–अलग आवास होना चाहिए।

सफाई व्यवस्था :

- बकरियां समूह में रहती हैं, इसलिए साफ–सफाई जरूरी है ताकि बीमारियां न फैलें।
- बर्तन नियमित रूप से साफ करें।
- मिंगनियों का निस्तारण रोजाना करें और उन्हें बाड़े से दूर गड्ढे में डालें।
- चारे और पानी की खेलियों को भी साफ रखें।

बाह्य और अंतः परजीवियों की रोकथाम :

- बाह्य परजीवियों (जैसे चिचड़े और जुएं) के प्रकोप होने पर दवा का छिड़काव करें।
- अंतः परजीवियों से बचाव के लिए नियमित अंतराल पर कृमिनाशक दवा दें।

टीकाकरण :

नियमित टीकाकरण से संक्रामक रोगों को रोका जा सकता है, जैसेः फिड़किया, माता रोग और मुंहपका–खुरपका जैसे रोग आदि।

बकरी पोषण :

- संतुलित दाना, चारा और सप्लीमेंट दें।
- एक बकरी को प्रतिदिन अपने शारीरिक वजन के 3.5 प्रतिशत मात्रा के बराबर शुष्क खाद्य पदार्थ की आवश्यकता होती है। इसे खेजड़ी की सांगरी, लूंग, बेरी का पाला और देसी बबूल की पत्तियों से पूरा किया जा सकता है।
- दूध देने वाली, प्रजनन योग्य बकरियों और तेजी से बढ़ने वाले बच्चों को अतिरिक्त संतुलित आहार दें।
- 40 कि.ग्रा. वजन वाली गर्भवती बकरी को 250–300 ग्राम दाना देना चाहिए।
- दुधारू बकरी को 250 ग्राम दाना निर्वाह राशन के रूप में और प्रति लीटर दूध पर 400 ग्राम दाना उत्पादकता के लिए देना आवश्यक है।
- बकरियों को पीने के लिए प्रचुर मात्रा में स्वच्छ जल उपलब्ध करवाएं।
- लवण धातु नियमित रूप से दें, विशेषकर जब पशु दूध दे रहा हो, गर्भवती हो या उसकी वृद्धि हो रही हो।
- बकरियों के बाड़े में खनिज लवण ईंट (मिनरल ब्रिक) रखें ताकि लवण धातुओं की आवश्यकता पूरी हो सके।

बकरी पालन सही देखभाल और प्रबंधन के साथ एक सफल और लाभदायक व्यवसाय हो सकता है।

डॉ. सुनील राजोरिया,
सहायक आचार्य, पशु विज्ञान केंद्र, डुंगरपुर।

दुधारू पशुओं में दुग्ध ज्वर

इस रोग को हाइपोकैल्सीमिया और पारच्यूरेन्ट पेरेसिस भी कहते हैं। यह एक मेटाबोलिक बीमारी है जो दुधारू पशुओं में कैल्सियम की कमी से होती है। दुधारू पशु के लिये कैल्शियम, फास्फोरस आदि खनिज तत्वों का आहार में संतुलित मात्रा में उपस्थित होना अति आवश्यक है। यह बीमारी व्यस्क मादा पशु में ब्याने के तुरंत बाद या कुछ दिन पहले, तथा ब्याने के बाद या पहले ऊतकों को कैल्सियम आयरन की कमी से हो सकती है। सामान्यतः यह रोग ब्याने के कुछ दिन पहले या तुरंत बाद (48–72 घंटो में) होती है। इससे पशु में हाइपोकैल्सीमिया, माँसपेशियों में कमजोरी व पशु सीने पर या साइड में लेट जाता है। यह ज्यादा दूध देने वाले पशुओं में मुख्य रूप से पाई जाती है।

कारण :

इस रोग का मुख्य कारण खून में कैल्शियम की कमी होना है, जो कई कारणों से हो सकता हैं:

- कोलोस्ट्रम व दूध में अत्यधिक मात्रा में कैल्शियम का स्त्राव होना।
- ब्याने के समय आंतों से कैल्शियम का अवशोषण कम होना, इसके निम्न लिखित कारण हो सकते हैः–
  - ब्याने के समय आहार/खाना पीना कम करना।
  - रुमीनल मूवमेंट का कम होना तथा अपच का होना।
  - आन्तों की किसी बीमारी का होना।
  - कैल्शियम–फास्फोरस का शरीर में संतुलन नहीं होना।
  - पशु शरीर में विटामिन–डी की कमी का होना।
  - हड्डियों से खून में कैल्शियम कम मात्रा में मिलना।
  - पैराथाइराइड ग्रंथि से पैराथार्मोन का स्त्राव कम होना।
  - खून में कैल्शियम का स्तर अचानक बढ़ जाना।
  - पशु को गर्भकाल के अंतिम समय में खनिज मिश्रण का कम मिलना।

लक्षण :

इस बीमारी मे तीन अवस्थाएँ हो सकती है।

- **उत्तेजनात्मक** : इस अवस्था में पशु लड़खड़ाकर चलता है तथा आंशिक लकवे के लक्षण दिखते हैं। इस अवस्था में अन्य लक्षण जैसे, दांत किटकिटाना व मुँह में झाग आना, माँसपेसियों व शरीर में हल्की कम्पन, सिर को इधर उधर दहलाना, तापमान सामान्य/हल्का कम/अधिक हो सकता हैं।
- **स्टर्नल रिकमबेनसी** : इस अवस्था मे पशु खड़ा नहीं हो पाता है और सीने पर बैठकर सिर फ्लेंक एरिया या सोल्डर की तरफ कर लेता है, चमड़ी ठंडी व तापमान सामान्य से कम हो जाता है। इस अवस्था में पशु में कब्ज हो जाती है तथा पेशाब और गोबर बंद कर देता है, आँख की पुतली चौड़ी व फैल जाती है तथा रीफ्लैक्स बंद हो जाते है।
- **लेट जाने की अवस्था** : इस अवस्था में जानवर उठने व सीधा बैठने में असमर्थ होता है और एक तरफ लेट जाता है। पशु के शरीर का तापमान सामान्य से काफी कम हो जाता है तथा चमड़ी व मजल ठंडी हो जाती हैं। सिर बेहोशी की हालात में इधर–उधर जोर से पटकता है। अंतिम अवस्था में दुग्ध ज्वर का प्रबंधन करना असम्भव सा हो जाता है और 12–24 घंटे में इलाज नहीं होने पर पशु की मृत्यु भी हो सकती हैं।

निदान :

- लक्षणों द्वारा पहचान कर सकते हैं, ब्याने के तुरंत बाद अधिक दूध देने की हिस्ट्री।
- स्टर्नल या लैटरल रिकमबेनसी का होना।
- पशु के शरीर का तापमान सामान्य से कम होना।
- सीरम में कैल्सीयम स्तर का कम होना।

उपचार :

- कैल्शियम लवण का इन्जेक्शन मुख्य इलाज है।
- नस में कैल्शियम देने से पहले बोतल को हल्का गरम किया जाता है और धीरे–धीरे चढ़ाया जाता है तथा विटामिन–डी का इन्जेक्शन दिया जाता है।
- एंटी–हिस्टामिनिक दवाई का प्रयोग करना चाहिए।
- यदि कीटोसिस के भी लक्षण हो तो 25 प्रतिशत डेक्स्ट्रोज भी दिया जा सकता है।

बचाव :

- ब्याने से 1–2 सप्ताह पूर्व आहार में कैल्शियम की मात्रा कम कर देवें।
- ब्याने के बाद दूध कम निकालें।
- पशु को ब्याने के समय साफ सुथरा व सूखी जगह पर रखे।
- ब्याने का समय नजदीक आने पर पशु का परिवहन ना करें ताकि अनावश्यक तनाव न हो।
- विटामिन डी–3 का इन्जेक्शन ब्याने से एक सप्ताह पूर्व लगावें।
- ब्याने के तुरंत बाद कैल्शियम का इन्जेक्शन लगा सकते हैं।
- मिनरल मिक्सर ब्याने के एक माह पूर्व आहार में देना शुरू कर दें।

इस तरह पशुपालक जागरूक रहकर अपने दुधारू पशु को इस बीमारी व इससे होने वाले आर्थिक नुकसान से बचा सकते हैं।

डॉ. प्रवीन बानो
सहायक आचार्य, पशु विज्ञान केंद्र, लूनकरनसर (बीकानेर)

बरसात के मौसम में पशुओं को थनैला रोग से बचायें

थनैला रोग दुधारू पशुओं में होने वाला रोग है जो कि मुख्यतः बरसात के मौसम में अधिक होता है क्योंकि बरसात के मौसम में अधिक तापमान व नमी रहती है व जीवाणुओं का संक्रमण अधिक रहता है जब पशु नमी वाले स्थान पर बैठता है तो ये जीवाणु पशु के थनों की दुग्ध नलिकाओं से पशु के थनों में प्रवेश कर जाते हैं जिससे पशु इस रोग से ग्रसित हो जाते हैं। यह एक जीवाणु जनित रोग है जो कि अधिकतर दुधारू पशु जैसे गाय, भैंस, बकरी में होता है। इस रोग की वजह से पशुपालकों को काफी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। अगर किसी पशु को थनैला रोग हुआ है तो उस पशु का दूध पीने लायक नहीं होता है। इस बीमारी से पीड़ित पशु का दूध उत्पादन 5 से 25 प्रतिशत तक कम हो जाता है।

रोग का कारण :–

- थनों में चोट लगना या थन का कट जाना।
- थनों में गोबर, पेशाब व कीचड़ से संक्रमण होना।
- दूध दुहने के समय अच्छी तरह साफ–सफाई का न होना।
- फर्श की अच्छी तरह से सफाई ना होना।
- थनों से पूरी तरह से दूध का न निकालना।
- मुख्यतः स्ट्रेप्टोकोकस, स्टैफिलोकोकस आदि जीवाणु इस रोग के संक्रमण के लिए जिम्मेदार होते हैं, परन्तु अन्य जीवाणु भी थनैला का कारण हो सकते हैं।
- दूध दोहन के लिए पशुपालक द्वारा गलत तरीके का उपयोग भी इस रोग का कारण माना जाता है, पूर्ण हस्तविधि द्वारा दूध दोहन कर इस रोग से बचा जा सकता है।
- थनों में प्रवेश करने के बाद ये जीवाणु दूध के सम्पर्क में आकर और अधिक वृद्धि करते हुए कोशिकाओं पर आक्रमण करते हैं और इन्हें नष्ट कर देतें हैं जिसके चलते पशु में थनैला रोग के विभिन्न लक्षण दिखाई देने लगते हैं।

रोग के लक्षण :–

थनैला रोग दुधारू पशुओं को मुख्यतया दो तरीके से प्रभावित करता है –

(1) लाक्षणिक थनैला रोग (2) अलाक्षणिक थनैला रोग

- लाक्षणिक थनैला रोग की पहचान रोग के लक्षणों को देखकर आसानी से की जा सकती है। प्रारंभिक लक्षणों में थनों में सूजन, पानी जैसा दूध आना।
- पशु के थन गर्म होने के साथ–साथ उसमें छिछडियां बन जाती है व प्रभावित थन का दूध खारा हो जाता है।
- दूध दुहते समय पशु दर्द महसूस करता है व अगर समय पर पशु की देखभाल ना की जाये व उपचार ना दिया जाये तो थनों में मवाद पड़ जाती है व बाद में थन कठोर होने के कारण उसका दुग्ध उत्पादन पूर्णतया बंद हो जाता है।
- पशु बीमार रहने लगता है व खान–पान कम कर देता है इस वजह से पशुपालक को दोहरा नुकसान उठाना पड़ता है।

(2) अलाक्षणिक थनैला रोग की पहचान लक्षणों से नहीं की जा सकती क्योंकि प्रभावित पशु रोग के बाहरी लक्षण नहीं दिखाता, इसलिए इसकी पहचान के लिए दूध की प्रयोगशाला में जांच करवानी चाहिए।

उपचार :–

- रोग का सफल उपचार रोग की प्रारंभिक अवस्था में ही संभव है अतः इसके लिए दुधारू पशु के दूध की जांच समय पर करवाकर जीवाणु नाशक औषधियों द्वारा उपचार पशुचिकित्सक द्वारा करवाना चाहिए। कुछ दवाईयां पशु के थनों में लगाई जाती है इस दौरान पशु का दूध पीने योग्य नहीं होता अतः अंतिम दवाई लगाने के 48 घंटे बाद तक पशु का दूध उपयोग में ना लेवें व उपचार को बीच में ना छोड़ें।

बचाव :–

- पशु के बांधे जाने वाले स्थान व दूध दुहने के स्थान की सफाई का विशेष ध्यान रखें।
- दूध दुहने की तकनीक सही होनी चाहिए जिससे थन को किसी प्रकार की चोट ना पहुंचे। चोट लगने पर थन का उपचार दूध दुहने से पहले व बाद में एक प्रतिशत लाभ दवा के घोल से थन साफ करें।
- दूध निकालने के तुरंत बाद पशु को बैठने ना दें क्योंकि दुग्ध नलिकाओं को बंद होने में लगभग 15 मिनट का समय लगता है, अगर पशु दूध दुहने के तुरंत बाद बैठ जाता है तो फर्श के जीवाणु दुग्ध नलिकाओं के जरिए थनों में प्रवेश कर जाते हैं व थनैला रोग की संभावना बढ़ जाती है।
- रोगी पशु का दूध अंत में निकालें एवं रोगी पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखें।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सफलता की कहानी

पशुपालन व खेती को अपनाकर ओमप्रकाश लेघा बने प्रेरणा स्त्रोत

ओमप्रकाश लेघा, चौधरी कॉलोनी, लूणकरणसर तहसील के एक प्रगतिशील, जागरूक एवं पढ़े–लिखे शिक्षित पशुपालक है। इन्होंने कृषि एवं पशुपालन का उचित सामजस्य बनाकर पशुपालन को एक बड़े व्यवसाय के रूप में अपना कर अपने समाज में मिसाल पेश की है। शुरूआत में इनके पास दो राठी गाय थी, फिर इन्होंनें धीरे–धीरे पशुपालन का व्यवसाय बढ़ाना प्रारम्भ किया। वर्तमान में ओमप्रकाश के पास 18 पशु है जिसमें से 6 राठी गाय, 8 क्रॉस ब्रीड व 4 साहीवाल नस्ल की गायों के साथ–साथ 3 मादा बछड़ियां व एक नर बछड़ा भी हैं। ओमप्रकाश इन पशुओं से वर्तमान में लगभग 150–170 लीटर दूध प्रतिदिन प्राप्त कर रहा है। ओमप्रकाश ने पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर के वैज्ञानिको के सम्पर्क में रहकर विभिन्न विषयों जैसे टीकाकरण एवं कृमिनाशक दवा का उचित उपयोग एवं इनसे लाभ, आवास प्रबंधन, आहार प्रबंधन, दूध उत्पादन विधियां एवं स्वच्छ दूध उत्पादन एवं अजोला उत्पादन तकनीक आदि जैसे कई विषयों पर समय–समय पर प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। वे पशुओं में होने वाली संक्रामक बीमारियों से अपने पशुओं को बचाने के लिए समय समय पर टीकाकरण भी करवाते रहते हैं तथा समय पर पशुओं को कृमिनाशक दवा भी देते हैं। ओमप्रकाश लेघा एवं इनका परिवार दूध के अलावा विभिन्न दुग्ध उत्पाद जैसे पनीर, घी, दही आदि बनाकर उनका विक्रय भी करते हैं। इन्होंनें अपने घर पर पशुओं को खिलाने के लिए अजोला यूनिट व नेपियर घास की यूनिट भी लगा रखी है, जिससे उनके पशुओं की हरे चारे की आपूर्ति होती रहती है तथा पशु आहार खर्च में भी बचत हाती है। ओमप्रकाश की वार्षिक आय लगभग 7–8 लाख रूपये तक हो जाती है। ओमप्रकाश पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा आयोजित पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में निरन्तर भाग लेकर पशुपालन से सम्बन्धित नए आयाम एवं वैज्ञानिक तौर–तरीके अपनाते रहते हैं। ओमप्रकाश लेघा अपनी इस सफलता का श्रेय अपनी मेहनत, लगन के साथ–साथ पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर को देते हैं।

सम्पर्कः ओमप्रकाश लेघा
चौधरी कॉलोनी, लूनकरणसर (बीकानेर) (मो. 9782440705)

निदेशक की कलम से...

शुष्क एवं संक्रमण काल में पशुओं के पोषण का रखे विशेष ध्यान

पशु का स्वास्थ्य व रोग प्रतिरोधक क्षमता पशु के सही प्रबंधन व आहार पर निर्भर करती है। विशेष तौर पर दुधारू पशुओं में ब्याने के समय के आसपास पोषण पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता रहती है। पशु के ब्याने के तीन सप्ताह पहले व तीन सप्ताह बाद का समय स्वास्थ्य की दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण है। इसे संक्रमण काल कहा जाता है। इस दौरान पशु की रोग–प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है तथा पोषक तत्वों की आवश्यकता भी बढ़ जाती है। इसी प्रकार शुष्क काल वह समय होता है जब दुधारू पशु स्वतः दूध देना बंद कर देता है अथवा पशुपालक स्वंय स्वेच्छा से दुहाई करना बंद कर देता है जिसके परिणाम स्वरूप धीरे–धीरे थनों में दूध सूख जाता है। शुष्क व संक्रमण काल में यदि पशु को उचित पोषण दिया जाये तो पशु को विभिन्न बीमारियों से बचाया जा सकता है तथा दूध उत्पादन भी बढ़ाया जा सकता है। अतः पशु को शुष्क काल के दो महीने तथा ब्याने के एक महीने तक विटामिन–ई, सैलेनियम, कॉपर व जिंक युक्त खनिज लवण मिश्रण उचित मात्रा में देना चाहिए। पशुओं को संक्रमण काल के समय उचित आहार नहीं देने पर नकारात्मक ऊर्जा संतुलन, पशुओं को विभिन्न उपापचयी एवं उत्पादन सम्बन्धी बीमारियों की सम्भावनाएं बढ़ जाती है। प्रसव के बाद मुख्य रूप से दुग्ध ज्वर, कीटोसिस, लहू मूतना, थनैला, जेर का रुकना तथा प्रजनन सम्बन्धी अन्य विकार होने की संभावनाएं रहती है। इसलिए प्रसव के तीन सप्ताह पूर्व एवं तीन सप्ताह बाद पशुओं का उचित आहार प्रबंधन सबसे महत्वपूर्ण है। ब्यांत के 20–22 दिन पूर्व से ही पशु को 50–60 ग्राम विटामिन युक्त खनिज लवण मिश्रण दलिया या अन्य आहार में मिलाकर खिलाना चाहिए जो प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने तथा पशु को स्वस्थ रखने में मदद करता है ब्यांत के बाद उच्च ऊर्जा वाला आहार जैसे गुड़, बिनौला व अन्य आहार आदि पशु को खिलाना चाहिए। प्रसव के बाद पशु के आहार में अनाज (दाने) या दलिया की मात्रा धीरे–धीरे बढ़ाना लाभकारी रहता है। पशु के पीने के लिए स्वच्छ पानी की व्यवस्था करें, पशुओं के बाड़े में साफ–सफाई का ध्यान रखें तथा विभिन्न संक्रामक बीमारियों से बचाव हेतु टीकाकरण भी अवश्य करवाना चाहिए। इस प्रकार उपरोक्त सावधानियां रखकर पशुपालक अपने पशुओं को विभिन्न बीमारियों से बचा सकते हैं तथा उनसे अधिक उत्पादन प्राप्त कर अपनी आय में बढ़ोतरी कर सकते हैं।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

"धीणे री बात्यां"

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम

माह के तीसरे गुरुवार को

सायं 5.30 से 6.00 बजे तक

प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

आकाशवाणी

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए

टोल फ्री हैल्पलाईन

1800 180 6224

मुख्य संपादक

प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया

संपादक

डॉ. दीपिका धूड़िया

डॉ. मनोहर सैन

संकलन सहयोगी

सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली

प्रसार शिक्षा निदेशालय

0151-2200505

email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/ विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया